

● पढ़ो, समझो और दोहराओ :



१२. सपूत

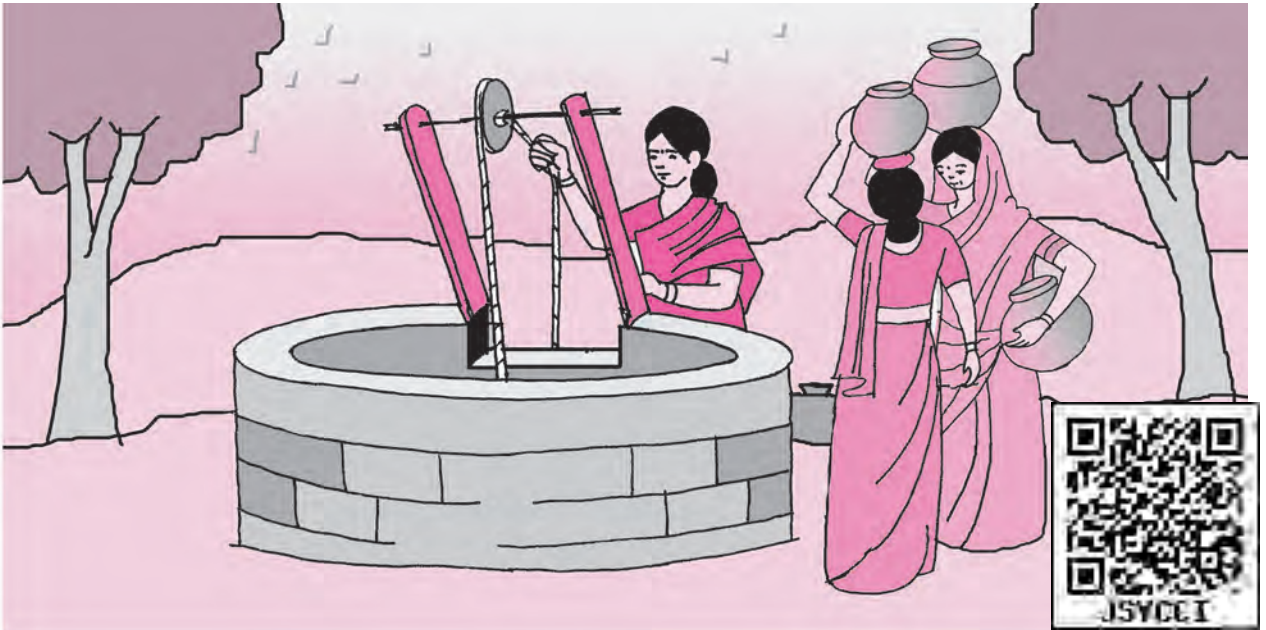


बहुत पुरानी बात है। फुलेरा नामक एक आदर्श गाँव था। गाँव में हर तरफ स्वच्छता थी। गाँव की गलियों में नियमित रूप से झाड़ू लगाई जाती थी। नालियाँ रोज साफ की जाती थीं। लिपाई-पुताई करके घर-आँगन सुंदर रखा जाता था। परिसर में बड़ी संख्या में पेड़-पौधे थे। कुएँ का पानी निर्मल रखने के लिए आवश्यक सावधानियाँ बरती जाती थीं। पनघट स्वच्छ और सुसज्जित था।

एक दिन पनघट पर तीन स्त्रियाँ पानी भर रही थीं। वे अपने-अपने लाड़ले के गुणों का बखान कर रही थीं। एक बोली, “बहन ! मेरा सपूत बड़ा विद्वान है। जब से शहर से पढ़कर आया है, चारों ओर उसकी धूम मची है।

बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ लेता है। आकाश के तारों को देखकर उनके नाम बता देता है। देश-विदेश की सभी बातों का उसे पता है।” दूसरी ने जोश में झट से आगे बढ़कर कहा, “अरी सखी ! मेरे लाल-जैसा बली तो दस-पाँच गाँवों में देखने को भी नहीं मिलेगा। पाँच सौ दंड-बैठक वह रोज सुबह लगाता है। अखाड़े में जब ताल ठोंककर उतर पड़ता है तो बड़े-बड़े पहलवान तक उसका मुकाबला करने से घबराते हैं। वह मेरा सपूत है।”

अब तीसरी स्त्री की बारी थी पर वह चुप रही। इसपर उन दोनों ने कहा, “बहन, तुम चुप क्यों हो ? लगता है तुम्हारा लड़का कपूत निकला।” तीसरी स्त्री बिना किसी जोश या



- समुचित आरोह-अवरोह और वाचिक अभिनय से कहानी का वाचन करें। सादगी, परिश्रम, मातृभक्ति और दायित्वबोध जैसे मूल्यों से संबंधित कहानियाँ उन्हें सुनाएँ। विद्यार्थियों को अन्य कोई कहानी सुनाने और उसपर चर्चा करने के लिए कहें।

गर्व से बोली, “बहनो ! सपूत या कपूत जैसे शब्द तो मैं नहीं समझती पर मेरा लाल मेरे लिए बहुत अच्छा है । वह सीधे-सादे स्वभाव का साधारण किसान है । दिन भर खेत में जुता रहता है । शाम को घर का काम करता है । आज बहुत कहने-सुनने पर वह मेला देखने गया है, इसीलिए मुझे पानी भरने आना पड़ा ।”

तीनों स्त्रियाँ अपने-अपने सिर पर घड़ा रखकर चल पड़ीं । अभी वे दो-चार कदम ही चली थीं कि पहली स्त्री का पुत्र आता हुआ दिखाई पड़ा । पास आते ही उसने अपनी माँ से कहा, “व्याख्यान देने जा रहा हूँ । भोजन वहीं करूँगा ।” यह कहकर वह तेजी से चला गया । तभी दूसरी स्त्री का पहलवान पुत्र भी आता हुआ दिखा । वह मतवाले हाथी की तरह झूम रहा था । उसने अपनी माँ से कहा, “माँ,

आज दंगल में मैंने एक नामी पहलवान को बुरी तरह पछाड़ा । पानी लेकर जल्दी घर पहुँचना, मुझे जोंगों की भूख लगी है ।” यह कहकर वह घर की ओर बढ़ गया ।

अंत में तीसरी स्त्री का पुत्र भी आ पहुँचा । वह बड़ा ही सीधा-सादा था । आते ही उसने अपने माँ के सिर से घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और बोला, “माँ, तुम क्यों पानी भरने चली आई ? मैं तो आ ही रहा था ।” माँ से घड़ा लेकर वह उत्साह के साथ घर की ओर चल पड़ा ।

यह देखकर अन्य दोनों स्त्रियों का सिर संकोच से झुक गया । उन्हें बोध हो गया था कि कर्तव्य और सेवा के बिना ज्ञान एवं बल अधूरे हैं । वे समझ गई कि सपूत तो तीसरी स्त्री का बेटा ही है ।

– श्रीकृष्ण



१. तीनों स्त्रियों ने अपने-अपने बेटे की कौन-सी विशेषताएँ बताई ?

२. अच्छे लड़के/ अच्छी लड़की में कौन-कौन-से गुण होने चाहिए, आपस में चर्चा करो ।

- ❑ कहानी तीन-चार बार पढ़वाएँ । मौन और मुखर वाचन करने के लिए कहें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के आशय पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को जीवन मूल्यों को व्यवहार में उतारने का महत्त्व समझाएँ । उनसे चर्चा द्वारा दृढीकरण कराएँ ।